अंध विश्वास और ढोंगी बाबा

बुरी नजर के खौफ से, मिर्च झोंकते आग।

बुरी सोच कैसे हटे, सड़ियल हुआ दिमाग।।

मात-पिता को छोड़ के, हरि भजते दिन रात।

हरि को छप्पन भोग हैं, मात -पिता को लात।।

पूजें माटी का बना , सुंदर सा इक नाग।

मारें जिंदे नाग को, सुना बीन का राग।।

गेरू से रंग वसन को, पत्नी से कर रार।

हाथ कमंडल धार के, चुप,-चुप हुए फरार।।

ढोंगी बाबा बन गये, झोली कंधा डाल।

घर -घर भिक्षा मांगते,लिखा बताते भाल।

माथे तिलक लगाय के, माला लीनी हाथ।

राम-राम भजते फिरें, घर का छोड़ा साथ।।

भूमि पर कब्जा जमा, धता पिला सरकार।

कुटिया से आश्रम बना, महल तिवारे कार।।

सत्संग अब देने लगे, जनता की भरमार।

बातें बता भविष्य की, दौलत मिले अपार।।

पूजन को साधन बना, रोज करें व्यापार।
ढोंगी बाबा भक्त बन, बना रहे लाचार।।

कुकर्मों से हैं रंगे, रोज-रोज अखबार।
बाबाओं के देखिए, मायावी किरदार।।

चमत्कार की आस में, बाबा करे विखंड।
हुआ धर्म के नाम पर, हरिहर यह पाखंड।।

पूजन का पाखंड कर, करें पुण्य की बात।
ढोंगी बाबा से मिले, सदा यहां आघात।।

धर्म कर्म से छल करें, बनकर बाबा खास।
ढोंगी होते वो सदा, नहीं करें विश्वास।।

- हरी सिंह खोवाल